45

क्या परमेश्वर सही है?

(9:14–29)

''यह ठीक नहीं है !'' आपने कभी ये शब्द सुने हैं ? मैंने नाराज़ बच्चों और निराश नवयुवकों को यह कहते सुना है, परन्तु उन वयस्कों को भी सुना है जिन्हें लगता था कि उन्हें उनका हक नहीं मिला। मैंने लोगों को प्रभु के बारे में ऐसी बातें करते सुना है: ''मैं बुरा व्यक्ति नहीं हूं। मैं दूसरों की सहायता करने में यकीन रखता हूं। फिर भी परमेश्वर ने *यह* होने दिया। यह बिल्कुल ठीक नहीं है!''

क्या परमेश्वर ठीक है ? हमारे वचन पाठ में पौलुस इसी सवाल की बात कर रहा था। आयत 14 में उसने पूछा, ''क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है ?'' (NIV)। NCV में यह प्रश्न ऐसे दिखाया गया है जैसे हम में से कुछ लोग पूछ सकते हैं: ''क्या परमेश्वर अन्यायी है ?'' इस प्रश्न की पृष्ठ भूमि यह थी कि कुछ इस्राएलियों (जिन्होंने यीशु में विश्वास किया) को चुनने और दूसरों को ठुकराने (जिन्होंने विश्वास नहीं किया) के लिए परमेश्वर न्यायी था या नहीं ? आयत 14 के शब्द लिखने के समय पौलुस के मन में एक विशेष परिस्थिति थी; परन्तु इस प्रश्न की व्यापक प्रासंगिकता है। क्या परमेश्वर अपने सारे व्यवहारों में सही है ? क्या वह हमारे साथ न्यायपूर्वक ढंग से व्यवहार करेगा ?

9:14–29 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर सही है क्योंकि उसकी पसन्दें *मेल खाती* हैं। वे उसके व्यवहार, व्यक्ति और उद्देश्य से मेल खाती हैं।

उसके व्यवहार से मेल खातीं (9:14-18)

9:1–13 में पौलुस ने परमेश्वर द्वारा की गई पसन्दों की बात लिखी। यहोवा ने इसहाक को चुन लिया और इश्माएल को ठुकरा दिया (आयतें 7ख–9); उसने याकूब को चुन लिया और एसाव को ठुकरा दिया (आयतें 10–13)। पौलुस ने पूछा, ''सो हम क्या कहें ?'' (आयत 14क)। यानी, ''कालांतर में परमेश्वर द्वारा की गई पसन्दों के बारे में हम क्या कहें ?'' चर्चा में वहां पर पौलुस ने वह प्रश्न पूछा, जिसके इर्द–गिर्द हमारा यह पाठ घूमता है: ''क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है ?'' (आयत 14ख)। पौलुस के लिए यह सुझाव भी परेशान करने वाला हो सकता था कि परमेश्वर अन्याय करने वाला है। उसने फुर्ती से एक मजबूत ''कदापि नहीं !'' (आयत 14ग) जोड़ दिया।

बेशक कोई यहूदी यह नहीं मानता कि परमेश्वर द्वारा इश्माएल की जगह इसहाक को चुना जाना या एसाव की जगह याकूब को चुना जाना गलत था। पौलुस इस निष्कर्ष की पृष्ठभूमि बना रहा था: *यदि उन पसन्दों को करने में परमेश्वर सही था तो वह तब भी सही था जब उसने अविश्वासी यहूदियों की जगह विश्वास करने वाले यहूदियों को चुना। इसके अलावा वह अविश्वासी*

यहूदियों की जगह विश्वास करने वाले अन्यजातियों को चुनने में भी सही था।

दयाः ईश्वरीय स्वीकृति (आयतें 15, 16)

इसहाक और याकूब की परमेश्वर की पसन्द से पौलुस बाइबल की दो और घटनाओं की ओर चला गया जिनसे हर यहूदी पाठक परिचित था। दोनों का सम्बन्ध मिस्र से कूच से था। पहली में मूसा और जंगल में इस्राएली शामिल थे: ''क्योंकि वह [परमेश्वर] मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा[1]'' (आयत 15)। यह उद्धरण निर्गमन 33:19 से लिया गया है। यह सोने के बछड़े की घटना के बाद मूसा और परमेश्वर में हुई बातचीत का एक भाग है। परमेश्वर की बातों का अर्थ था कि ''यह निर्णय *मैं* लूंगा कि कौन मेरी दया और कृपा का पात्र है।''

इस बात से पौलुस इस निष्कर्ष पर पहुंचा ''सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है'' (रोमियों 9:16)। ''दौड़ने वाले'' यूनानी धर्मशास्त्र का मूल अनुवाद है। पौलुस दौड़ जीतने के लिए कुछ भी करने वाले व्यक्ति के रूपक का इस्तेमाल कर रहा था। AB में ''strenuous exertion as in running a race'' है। आयत 16 को हम कुछ इस प्रकार लिख सकते हैं: ''सो यह न तो चाहने वाले (''इच्छा करने वाले'') की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले *परमेश्वर* की बात है।''

पौलुस की बात से ऐसा प्रत्युत्तर उठ सकता है: ''पर निश्चय ही हमें दया की इच्छा करनी चाहिए और निश्चय ही हमें दया पाने के लिए जो भी कर सकते हैं करना चाहिए।'' यह सही है पर पौलुस यह सिद्ध कर रहा था कि इच्छा और प्रयास अपने आप में दया की गारण्टी नहीं है। चाहना और करना परमेश्वर को हमारा कर्जदार नहीं बना देता। यह निर्णय लेना परमेश्वर का अधिकार है कि किस पर दया करनी है।

जंगल में इस्राएली एक अच्छा उदाहरण हैं। निर्गमन से लिए उद्धरण के संदर्भ में मूसा इस्राएलियों की ओर से याचना करते हुए परमेश्वर से उन्हें क्षमा करने की भीख मांग रहा था (निर्गमन 32:31, 32क) और उसे उनके साथ बने रहने को कह रहा था (33:15)। क्या इस्राएलियों को दया की इन अभिव्यक्तियों का *अधिकार* था। परन्तु परमेश्वर ने उस अवसर पर उन पर दयालु होना चुना। क्या पौलुस के पाठक यह मान लेते कि परमेश्वर उनके पूर्वजों पर दया करके *सही* था? बेशक।

कठोर होनाः ईश्वरीय ठुकराना (आयतें 17, 18)

आयत 17 में पौलुस समय में निर्गमन से पहले की घटनाओं की ओर पीछे चला गया: ''क्योंकि पवित्र शास्त्र में फिरौन से कहा गया,[2] कि मैं ने तुझे इसीलिए खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊं, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो।''[3] यह उद्धरण निर्गमन 9 से लिया गया है। छठी विपत्ति (फोड़ों) और सातवीं विपत्ति (ओलों) के बीच परमेश्वर ने मूसा को उसका संदेश फिरौन को देने के लिए। मूसा के माध्यम से परमेश्वर ने फिरौन को बताया कि वह उसे और सब मिस्रियों को नष्ट कर सकता है। ''परन्तु,'' उसने कहा कि ''सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए [मूल में, ''खड़ा''[4]] रखा है कि तुझे अपनी सामर्थ्य दिखाऊं, और अपना नाम

सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं'' (निर्गमन 9:16)। निर्गमन के वचन में और पौलुस के उद्धरण में मामूली सा अन्तर है। पौलुस ने कहा, ''मैंने तुझे [राजा होने के लिए] इसीलिए खड़ा किया है,'' जबकि पुराने नियम के वचन में है, ''मैंने [राजा के रूप में] इसी कारण तुझे बनाए रखा।'' दोनों संस्करणों में यह ज़ोर दिया गया है कि जातियों का भविष्य परमेश्वर के हाथ में है।

हमें इस बात का अहसास होना आवश्यक है कि ईश्वरीय निर्देश ''मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे'' (निर्गमन 5:1) का उत्तर फिरौन चाहे जैसे भी देता उसने परमेश्वर के उद्देश्य को ही पूरा करना था। यदि फिरौन उसकी बात मान लेता तो यह खबर फैल जानी थी कि मिस्र के शक्तिशाली राजा के इस्राएलियों के परमेश्वर की मांगें मान ली हैं। जिस कारण पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर की सामर्थ और उसके नाम का प्रचार होना था। बेशक, फिरौन ने इनकार कर दिया जिस कारण कूच, लाल समुद्र पार करने और मिस्री सेना के विनाश से पहले दस विपत्तियां आईं। उन सामर्थ के कामों का समाचार दूर-दूर तक फैल गया (देखें यहोशू 2:10, 11; 9:9; 1 शमुएल 4:8)।

पौलुस ने विस्तार से नहीं बताया कि परमेश्वर ने फिरौन के साथ कैसा व्यवहार किया, क्योंकि यह वह कहानी थी, जिसे स्कूल जाने वाला हर यहूदी बच्चा जानता था। मुख्य बात जो पौलुस अपने पाठकों को बताना चाहता था, वह फिरौन के हृदय का कठोर होना था। आयत 18 में पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ''जिसे चाहता है उसे कठोर कर देता है।'' कठोर मन विश्वास न करने वाला, ढीठ और बात न मानने वाला होता है। डग्लस जे. मू ने लिखा है कि यह ''परमेश्वर, उसके वचन और उसके काम के लिए असंवेदनशीलता की एक स्थिति'' है।[5]

लोगों ने इस पर कि परमेश्वर ने फिरौन का मन *कैसे* (किस अर्थ में) कठोर किया, चर्चा के लिए कई घण्टे खर्च किए हैं। जब हम दस विपत्तियों के बारे में पढ़ते हैं तो इस विवरण के समय का कुछ भाग कहता है कि परमेश्वर ने फिरौन का मन कठोर किया (निर्गमन 9:12; 10:1, 20, 27; 11:10; 14:8) और समय का कुछ भाग कहता है कि फिरौन ने अपने मन को कठोर किया (निर्गमन 7:13, 14, 22; 8:15, 19, 32; 9:7, 34, 35)। कई लेखक यह निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर ने यह कहते हुए कि ''मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे'' अप्रत्यक्ष रूप से मूसा के द्वारा फिरौन का मन कठोर किया, जबकि फिरौन ने परमेश्वर के आदेश को सुनने से इनकार करके अपना मन कठोर किया। लियोन मौरिस ने लिखा है कि ''न तो यहां न कहीं और परमेश्वर द्वारा किसी का मन कठोर करने की बात मिलती है, जिसने पहले अपने आप को कठोर न किया हो।''[6]

आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला उदाहरण मक्खन और कीचड़ पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों का है, वही किरणें जो मक्खन को पिघला देती हैं, कीचड़ को सूखाकर कठोर कर देती हैं। इसी प्रकार जब परमेश्वर बात करता है तो कइयों के मन नरम हो जाते हैं जबकि कई अपने मनों को कठोर कर लेते हैं। परमेश्वर की बातों से फिरौन का मन कठोर हो गया क्योंकि उसका मन (यदि हम इस प्रकार से कहें) ''कीचड़ का बना'' था।

आज लोगों को समझ नहीं आता कि परमेश्वर ने फिरौन का मन कैसे कठोर किया। परन्तु यह समझ लें कि पौलुस कोई ऐसा मुद्दा *नहीं* उठा रहा था जो उसके यहूदी श्रोताओं में विवादास्पद रहा हो। मैं कुछ ऐसे लोगों से मिला हूं, जिन्होंने पढ़ा है कि परमेश्वर ने फिरौन का मन कठोर कर दिया और फिर उसके लिए खेदित हुआ, परन्तु यहूदी लोगों के मनों में फिरौन के प्रति

कोई सहानुभूति नहीं थी। जहां तक उनकी बात थी, परमेश्वर को उस दमनकारी हाकिम का अपनी मर्जी के अनुसार कुछ भी करने का अधिकार था।

पौलुस ने फिर एक संक्षिप्त टिप्पणी की: ''सो वह [परमेश्वर] जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है'' (रोमियों 9:18)। यदि आप किसी यहूदी से पूछते कि ''आपके पूर्वजों पर दया दिखाकर क्या परमेश्वर ने सही किया?'' तो वह यही कहता, ''बिल्कुल।'' यदि आप उससे पूछते, ''क्या परमेश्वर ने फिरौन का मन कठोर करके सही किया?'' उसका जवाब होगा, ''बिल्कुल!'' इस प्रकार पौलुस यह साबित कर रहा था कि परमेश्वर जब किसी को स्वीकार करता है और दूसरों को ठुकराता है तो वह सही होता है क्योंकि यह वर्षों से उसके व्यवहार से मेल खाता है। उसने *हमेशा* कुछ को स्वीकार किया जबकि दूसरों को ठुकराया है।

उसके व्यक्तित्व से मेल खाता (9:19-21)

पौलुस का दूसरा प्वाइंट था कि परमेश्वर अपनी पसन्द चुनने में सही है क्योंकि यह उसके व्यक्तित्व से मेल खाता है यानी उसकी पसन्द, उसके स्वभाव से, जो वह है मेल खाती है।

उत्तेजित करने वाले प्रश्न (आयत 19)

पौलुस ने एक आपत्ति का पूर्वानुमान लगाने के अपने विचार के साथ परिचय दिया: ''सो तू मुझ से कहेगा, वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उस की इच्छा का साम्हना करता है?'' (आयत 19)। इस आयत में आपत्ति करने वाले जिस व्यक्ति की कल्पना की गई वह सम्भवतया यहूदी नहीं रहा होगा। अभी तक (आयत 7 के बीच में आरम्भ करते हुए) पौलुस के तर्क से कुछ ऐसा नहीं दिखाया गया था, जिससे कोई यहूदी असहमत हो। इसलिए आयत 19 पर आने के समय हमें पौलुस को अपने साथी यहूदियों के साथ खड़े, एक काल्पनिक बाहरी व्यक्ति का सामना करते और उसका विरोध करते देखने की कल्पना करनी चाहिए। आयत 20 की तरह पौलुस ने उसे ''हे मनुष्य'' कहा। *इस* व्यक्ति की शिकायत दी गई है: ''यदि परमेश्वर जिस पर चाहे दया करता है और जिसे चाहे कठोर कर देता है [देखें आयत 18], तो इसमें बुरा क्या है? आखिर उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है?''

ईश्वरीय पूर्व ज्ञान पर चर्चाओं में मुख्य रूप से ऐसे ही प्रश्न होते हैं। यदि परमेश्वर को पहले से मालूम था और कुछ मामलों में उसने पहले से बता भी दिया कि फलां व्यक्ति एक विशेष काम करेगा तो परमेश्वर ने उस व्यक्ति को उसके किए के लिए ज़िम्मेदार क्यों ठहराया? परमेश्वर की इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? आयत 19 के प्रश्नों को पढ़ने पर हम यह सुनने को उत्सुक होते हैं कि पौलुस ने इसका उत्तर कैसे दिया।

हैरान करने वाला उत्तर (आयतें 20, 21)

पौलुस ने वैसे उत्तर नहीं दिया जैसे हम उम्मीद कर सकते हैं कि वह उत्तर देता। उसने परमेश्वर की सम्प्रभुता और मनुष्य की स्वतन्त्रता के बीच सम्बन्ध पर लम्बी चर्चा के साथ आरम्भ नहीं किया। इसके बजाय उसका मूल प्रत्युत्तर यह था कि परमेश्वर किसी मनुष्य के प्रति जवाबदेह

नहीं है। आखिर वह परमेश्वर है!

पौलुस ने कहा, ''हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है?'' (आयत 20क)। इस प्रश्न में दो शब्दों यानी ''मनुष्य'' (*anthropos*[7]) और ''परमेश्वर'' (*theos*) में अन्तर किया गया है। एक ओर तो सीमित, सीमाबद्ध, अदना सा अज्ञानी मनुष्य है; जबकि दूसरी ओर असीमित, असीम, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर है। यह अन्तर CJB में उघाड़ा गया है जिसमें आयत 20 के पहले भाग को, इस प्रकार अनुवाद किया गया है, ''तू कौन है, हे मात्र मनुष्य, कि परमेश्वर से सवाल करे?''

परमेश्वर से मनुष्य के सवाल करने के बतुकेपन को दिखाने के लिए पौलुस ने एक रूपक का इस्तेमाल किया, जिससे यहूदी लोग परिचित थे: एक कुम्हार और उसकी मिट्टी का रूपक (देखें यशायाह 29:15; 45:9; 64:8; यिर्मयाह 18:6)। ''क्या घढ़ी हुई वस्तु घढ़ने वाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है? क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से, एक बर्तन आदर के लिए, और दूसरे को अनादर के लिए बनाए? तो इस में कौन सी अचम्भे की बात है?'' (रोमियों 9:20ख, 21)।

बाइबल के समयों में अपने चक्के के साथ कुम्हार का दृश्य आम बात थी। कुम्हार चक्के के बीच में लोंदा रख देता और फिर बड़ी कुशलता से उसे मिट्टी को बर्तन में ढाल देता। यह ''आदर योग्य इस्तेमाल के लिए'' बर्तन भी हो सकता था जैसे ''सुन्दर बर्तन'' (Phillips) या ''आम इस्तेमाल के लिए'' बर्तन भी हो सकता था जैसे ''कूड़ा फैंकने के लिए'' पात्र (NLT)। ''आदर योग्य इस्तेमाल'' और ''आम इस्तेमाल'' के बजाय यूनानी बाइबल में ''आदर'' और ''अनादर'' है। इस्राएली लोग जिन्हें परमेश्वर ने विशेष लोगों के रूप में आदर दिया था (आयतें 4, 5) ''आदर के लिए'' बर्तन का एक उदाहरण है। ''अनादर के लिए'' बर्तन का एक उदाहरण फिरौन हो सकता है। पौलुस यह कह रहा था कि मिट्टी पर कुम्हार का अधिकार था इसलिए कूड़े के पात्र ने कभी यह शिकायत नहीं की कि ''आपने मुझे सुन्दर बर्तन क्यों नहीं बनाया?''[8]

सब रूपकों की तरह इस पर भी अत्यधिक दबाव नहीं दिया जाना चाहिए। पहली बात तो यह कि लोग मिट्टी के बेजान लोंदे नहीं हैं, वे परमेश्वर का विरोध कर सकते हैं यानी वे आमतौर पर शिकायत करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें ऐसा क्यों बनाया है। (''मैं इतना छोटा ... लम्बा ... नाटा ... बड़ा क्यों हूं?'') दूसरा ''मिट्टी'' की किस्म से यह तय हो सकता है कि इससे कैसा और किस काम के लिए इस्तेमाल होने वाला बर्तन बनाया जाए (यिर्मयाह 18:1-10; 2 तीमुथियुस 2:20, 21)। फिरौन के साथ बेशक ऐसा ही हुआ था। तौ भी पौलुस का विचार मानने योग्य है कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और उसे जो उसकी इच्छा हो वह करने का अधिकार है।

हम में से कई लोग इस बात से परेशान हो सकते हैं कि पौलुस ने आयत 19 के प्रश्नों का उत्तर देने का कम प्रयास किया, परन्तु याद रखें कि वह ऐसे ढंग का इस्तेमाल कर रहा था जो यहूदियों को आकर्षित करने के लिए बनाया गया था। यदि कोई गैर यहूदी सुझाव देता कि परमेश्वर के लिए इश्माएल की जगह इसहाक या एसाव की जगह याकूब को चुनना गलत था या यह कि यहोवा के लिए फिरौन का मन कठोर करने के बाद इस्राएलियों के विद्रोह को नज़रअंदाज़

करना गलत था ? किसी यहूदी द्वारा यह उत्तर दिए जाने की कल्पना करना कठिन नहीं है कि ''तुम यह सोचने वाले कौन होते हो ? परमेश्वर से सवाल करने का तुम्हें किसने अधिकार दिया है ?'' बेशक पौलुस इस निष्कर्ष का पूर्वानुमान लगा रहा था कि न तो किसी गैर यहूदी को परमेश्वर की पसन्द पर सवाल उठाने का अधिकार है और न किसी यहूदी को ही यहोवा से प्रश्न करने का अधिकार है जब वह विश्वासियों को चुनने और अविश्वासियों को चुनने का निर्णय लेता है।

''क्या परमेश्वर सही है ?'' प्रश्न के विषय में हम पौलुस के दूसरे प्वाइंट को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं: ''परमेश्वर सही है, क्योंकि वह परमेश्वर है। और जो कुछ भी वह करता है वह उसके स्वभाव से और जो वह है उससे मेल खाएगा।'' कई बार हो सकता है कि मुझे और आपको यह समझ न आए कि परमेश्वर जो करता है वह *क्यों* करता है (आखिर हम तो केवल मनुष्य हैं), परन्तु हम भरोसा कर सकते हैं कि वह जो भी करता है वह सही होता है। जैसे अब्राहम ने कहा था, ''क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे ?'' (उत्पत्ति 18:25)।

अपने उद्देश्य से मेल खाता (9:22-29)

यह साबित करने के बाद कि परमेश्वर को अधिकार है कि कुछ को चुने और दूसरों को ठुकराए, पौलुस अविश्वासियों के बजाय विश्वासियों को चुनने (चाहे यहूदी हों या अन्यजाति) के परमेश्वर के विशेष प्रश्न पर वापस आया। आयत 22 से आरम्भ करते हुए आयत 29 तक जाकर पौलुस ने परमेश्वर की निष्पक्षता का प्रमाण दिया। विशेषकर उसने ज़ोर दिया कि परमेश्वर की पसन्द सही थी क्योंकि वह उसके उद्देश्य यानी वे पुराने नियम के नबियों द्वारा घोषित से मेल खाती थीं।

परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ (आयतें 22-24)

यूनानी धर्मशास्त्र में 22 से 24 आयतें एक ही वाक्य में हैं (देखें KJV)। यूनानी में शब्दों का प्रबन्ध जटिल बल्कि उलझाने वाला लगता है, परन्तु पौलुस का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट है। इस वाक्य का आरम्भ प्रेरित के यह पूछने से होता है, ''कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बर्तनों की, जो विनाश के लिए तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही? ?'' (आयत 22)।

इस आयत को समझने के लिए इसे अलग करके थोड़ा-थोड़ा देखने से सहायता मिल सकती है। परमेश्वर ''अपना क्रोध दिखाने और अपनी इच्छा प्रकट करने'' को तैयार था। संदर्भ में इन शब्दों को फिरौन से कही परमेश्वर की बात से जोड़ा जा सकता है (देखें आयत 17), परन्तु वे एक सामान्य सच्चाई को भी बयान करती हैं। अन्त में अधर्मियों पर उसका क्रोध गिरने से परमेश्वर की सामर्थ दिखाई जाएगी (देखें 1:18)।

बेशक, न्याय का दिन आ रहा है, परन्तु परमेश्वर ने ''क्रोध के बर्तनों को जो विनाश के लिए तैयार किए हुए थे, बड़े धीरज से सहा।'' पौलुस ने कुम्हार और मिट्टी के रूपक को जारी रखा परन्तु एक अलग प्रासंगिकता के साथ।''विनाश के लिए तैयार'' बर्तन के लिए फिरौन एक अच्छा उदाहरण है, जिसे परमेश्वर ने ''बड़े धीरज से सहा।'' परमेश्वर ने फिरौन को अपना मन बदलकर इस्राएलियों को जाने की अनुमति देने के लिए एक के बाद एक अवसर दिया। एक और उदाहरण जंगल में इस्राएली हो सकते हैं। यदि परमेश्वर ने उन्हें ''धीरज से सहा'' न होता तो एक जाति के

रूप में उनका नामोनिशान मिट गया होता। यही नियम पुराने नियम के समय के अधर्मी अन्यजातियों पर भी लागू हो सकता है, और हां, यह हमारे ऊपर भी लागू हो सकता है। परमेश्वर *लगातार* ''क्रोध के बर्तनों को जो विनाश के लिए तैयार किए गए थे, बड़े धीरज से सहता'' है। क्यों? क्योंकि वह हमें मन फिराने के अवसर दे रहा है (देखें 2:4)। पतरस ने लिखा, ''प्रभु ... तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। परमेश्वर अपना क्रोध उण्डेलने के बजाय अपनी दया बहाता है।

इस सब को ध्यान में रखते हुए आइए आयत 22 को उस प्रश्न के साथ जोड़ते हैं, जिसके साथ हम ने आरम्भ किया था। आयत 14 में प्रश्न था कि ''क्या परमेश्वर सही है?'' (या ''क्या परमेश्वर गलत है?''; NCV)। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''खोए हुओं के साथ परमेश्वर के धीरज रख कर उन्हें मन फिराने का अवसर देने का क्या अर्थ है?'' आयत 22 में दिए प्रश्न के उत्तर का संकेत है कि ''क्या यह इस बात को नहीं दिखाता कि परमेश्वर कितना सही है?''; ''बेशक!''

आगे बढ़ते हुए, आयत 23क कहती है, ''और दया के बर्तनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहिले से तैयार किया [खोए हुओं के साथ धीरज रख कर उसने उन्हें मन फिराने का अवसर दिया], अपने महिमा के धन को प्रगट करने'' के लिए किया। परमेश्वर का ''दया के बर्तनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा'' करना हमें निर्गमन की कहानी और सीनै पहाड़ पर इस्राएलियों को अनुग्रह से छोड़ देना याद आ सकता है (आयतें 15, 18क)। उस अवसर पर परमेश्वर ने जो दिखाया वह यही था कि उसकी दया कितनी अधिक (''धनवान'') हो सकती है।

परन्तु परमेश्वर फ़िरौन और इस्राएलियों के उदाहरण से आगे बढ़ कर इसे विचाराधीन विषय के लिए प्रासंगिक बनाने को तैयार था।''दया के बर्तनों'' की बात करने के बाद प्रेरित ने जोड़ा कि ''जिन्हें उस ने महिमा के लिए पहले से तैयार किया, अर्थात जिन्हें उस ने बुलाया'' (आयतें 23ख, 24)।''पहले से तैयार किया'' और ''बुलाया'' उनकी बात करने का और ढंग है जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना या पहले से ठहराया (8:29, 30),[10] अन्य शब्दों में वे जिनका उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ है।

''हम, जिन्हें उस ने ... बुलाया'' (9:24) कहने के बाद यह जोड़ कर कि ''न केवल यहूदियों में से वरन अन्यजातियों में से भी बुलाया'' (आयत 24ख) कह कर पौलुस मुख्य विवाद में आ गया। यहूदियों को परेशान करने लिए इतनी सी बात भी काफ़ी थी कि परमेश्वर ने कुछ यहूदियों को ठुकरा दिया है। यह इससे भी परेशान करने वाला था कि परमेश्वर ने अन्यजातियों में से कइयों को ग्रहण कर लिया है। वास्तव में उस ने यहूदियों की तुलना में अधिक अन्यजातियों को ग्रहण किया था।[11] सदियों पहले यहूदियों के साथ परमेश्वर की की गई वाचा को ध्याान में रखते हुए क्या परमेश्वर सही था?

परमेश्वर का उद्देश्य पहले से बताया गया (आयतें 25-29)

पौलुस का उत्तर था कि ऐसी स्थिति की भविष्यवाणी नबियों द्वारा पहले से कर दी गई थी। यह साबित करने के लिए कि यह परमेश्वर की योजनाओं और अन्यजातियों को शामिल करने के

उद्देश्यों से मेल खाता था पहले होशे नबी की दो आयतें दोहराईं:

> जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है,[12]
> कि जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा;
> और जो प्रिय न थी, उसे प्रिय कहूंगा
> [होशे 2:23]।
> और ऐसा होगा कि जिस जगह में उन से यह कहा गया था,
> कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो,
> उसी जगह वे जीवते परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे
> [होशे 1:10] (रोमियों 9:25, 26)।

संदर्भ में होशे से ये आयतें पढ़ें और आप पाएंगे कि होशे अन्यजातियों की नहीं, बल्कि पीछे मुड़ने वालों की बात कर रहा था। परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस एक *नियम* को स्थापित करने के लिए इन आयतों का इस्तेमाल कर रहा था: जो परमेश्वर के लोग *नहीं* हैं उनके लिए परमेश्वर के लोग *बनना* सम्भव है। इसलिए यह परमेश्वर की योजना से मेल खाता था कि अन्यजाति जो परमेश्वर के लोग नहीं थे (देखें इफिसियों 2:11, 12) परमेश्वर के लोग (मसीही) बन जाएं।

इस तथ्य का क्या कि परमेश्वर ने केवल कुछ यहूदियों को ग्रहण किया था (जिन्होंने यीशु में विश्वास किया) जबकि अधिकतर इस्राएल जाति को ठुकरा दिया (देखें रोमियों 9:6ख)? पौलुस ने कहा कि नबियों ने भी भविष्यवाणियां की थीं कि ऐसा ही होगा। इस बार उसने यशायाह से दोहराया:

> यशायाह इस्राएल के विषय में पुकारकर कहता है, कि चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो [उत्पत्ति 22:17], तौभी उन में से थोड़े ही बचेंगे। क्योंकि प्रभु अपना वचन पृथ्वी पर पूरा करके, धार्मिकता से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा[13] (रोमियों 9:27, 28; देखें यशायाह 10:22, 23)।

इस आयत में मुख्य शब्द ''बचेंगे'' (*hupoleimma*) है, जो ''छोटी संख्या''[14] का संकेत देता है। यदि आप यशायाह 10:22, 23 का संदर्भ पढ़ें तो आप देखेंगे कि नबी बचे हुए इस्राएलियों के फिर से दासता में लौटने की बात कर रहा था। फिर पौलुस परमेश्वर की प्रेरणा की प्रासंगिकता बना रहा था। पुराने नियम में यहूदा के बचे हुए लोग ही दासता से बचाए गए थे। इस लिए यह हैरानी वाली बात नहीं होनी चाहिए कि इस्राएल के बचे हुए लोग नये नियम के युग में बचाए जाएंगे।

''बचे हुए'' दोहरा संदेश था। पहले तो *दुखद* समाचार था कि *केवल* बचे हुए ही बचाए जाएंगे। दूसरा *दुखद* समाचार था कि बचे हुए बचाए *जाएंगे* (देखें रोमियों 11:5)। *सभी* इस्राएलियों ने नहीं ठुकराए जाना था। पौलुस ने फिर से यशायाह में से दोहरा कर संदेश का अगला भाग बता दिया: ''जैसा यशायाह ने पहिले भी कहा था, कि यदि सेनाओं [सबाओथ[15]] का प्रभु हमारे लिए कुछ वंश न छोड़ता, तो हम सदोम की नाईं हो जाते, और अमोरा के सरीखे ठहरते'' (9:29: देखें यशायाह 1:9)।

यशायाह की आयत यहूदा और यरूशलेम के भयानक समय की बात थी, जब अश्शूरियों ने देश पर हमला किया। पहले परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को पृथ्वी से इतनी बुरी तरह से मिटा दिया था (देखें उत्पत्ति 19:24, 25) कि हम जान भी नहीं सकते कि इस नाम का कोई नगर कभी रहा होगा। अश्शूरियों के हमले के दौरान इस्राएलियों के साथ ऐसा नहीं हुआ था। इसके बजाय एक बकिये को अर्थात एक वंश को छोड़ा गया था जो बढ़ सकता था। इसी प्रकार पौलुस के समय में परमेश्वर ने इस्राएल में अपने लोगों को बचा कर रखा था जिन्होंने पौलुस की तरह यीशु को मसीहा माना था (देखें 11:1)। परमेश्वर अपने इन लोगों के द्वारा अपना उद्देश्य पूरा कर सकता था और उसने करना था।

सारांश

परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ सदियों तक काम किया था। तो फिर अन्त में परमेश्वर की योजना में केवल कुछ लोग ही क्यों बचे थे? पौलुस ने इस पत्र के अगले भाग में इस प्रश्न का उत्तर दिया।

इस पाठ में कुछ लोगों को चुनने और कुछ को ठुकराने की परमेयवर की निष्पक्षता पर चर्चा की है। बेशक जिस विशेष समस्या की चर्चा पौलुस ने की आज हमारे लिए परेशानी नहीं है, मुझे उम्मीद है कि यह सच्चाई आपके मन में बस गई है कि परमेश्वर सही *है;* वह सच्चा है; वह धर्मी है। जब कोई भी यह सुझाव देता है कि परमेश्वर सही नहीं है तो वह परमेश्वर के बारे में कम अपने बारे में अधिक कह रहा होता है। वह अपनी ही अज्ञानता और अविश्वास को दिखा रहा है।

परन्तु हमारा वचन पाठ इतना ही घोषित नहीं करता कि परमेश्वर सही है; यह इस बात की भी घोषणा करता है कि वह *दयालु* है। सी. बी. क्रेनफील्ड ने सुझाव दिया है कि 9 से 11 अध्यायों का "मुख्य शब्द" "अनुग्रह" है।[16] इन अध्यायों में शब्द के क्रिया और संज्ञा रूप नौ बार और शेष पत्र में केवल एक बार मिलता है।[17] मैं शुक्रगुज़ार हूं कि परमेश्वर सही है पर मैं दिल से आनन्दित हूं कि वह दयालु भी है। क्योंकि यह सही है, इसलिए मुझे अनन्तकाल तक बचाए जाने की उम्मीद है।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस पाठ का इस्तेमाल करने पर, परमेश्वर के अनुग्रह पर अन्तिम टिप्पणियां इस चर्चा की ओर ले जा सकती हैं कि हमें आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को कैसे ग्रहण करना है।

आपको अपने वचन पाठ में कई जगह अपने सुनने वालों को व्यक्तिगत रूप से लागू करने के लिए बीच-बीच में रुकना पड़ सकता है। आप टैक्सचुअल या विषयात्मक पाठों के लिए स्प्रिंगबोर्ड के रूप में वचन पाठों का इस्तेमाल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए आप 15,16, और 18 आयतों के लिए अनुग्रह के विषय पर ज़ोर दे सकते हैं।

एक भाग जो अपने आपको प्रासंगिकता तथा चर्चा में ले जाता है वह लोगों का वापिस परमेश्वर से बातें करना है (आयत 20)। आज कुछ लोग हैं जो पूछते हैं, "आपने मेरे साथ ऐसा

क्यों किया ?'' हमारी शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक बनावट आम तौर पर हम पर सीमाएं ठोक देती हैं। आयत 20 का इस्तेमाल उस पर चर्चा के परिचय के रूप में किया जा सकता है कि हमारे साथ होने वाली बात पर प्रश्न पूछना कब सही और गलत है। वाल्टर डब्ल्यू. वैस्सल ने लिखा है, ''पौलुस मनुष्य द्वारा परमेश्वर के सब प्रश्नों को खामोश नहीं कर रहा, बल्कि वह उनके साथ बात कर रहा है जो अपश्चातापी हैं अर्थात परमेश्वर को ललकारने वाला व्यवहार जो अपने कामों के लिए परमेश्वर को जवाबदेह बनाना चाहते हैं, अपने प्रश्नों से परमेश्वर को बदनाम करते हैं।''[18] रिचर्ड बेटी ने लिखा है कि ''परमेश्वर को समझने के लिए मनुष्य की योग्यता से बढ़कर परमेश्वर में भरोसा रखने के लिए कहा जाता है। प्रेरित के लिए परमेश्वर के कामों को युक्तिसंगत करने के प्रयास अधार्मिक होंगे, क्योंकि ऐसी युक्तिसंगतियां मानवीय कारण को ग्रहण योग्य परमेश्वर के काम बनाने की मनुष्य की इच्छा से बनते हैं।''

टिप्पणियां

[1]इस पद्य में ''दया करूंगा'' (*eleeo*) ''कृपा करूंगा'' (*oikteiro*) का इस्तेमाल प्राय: अदल बदल कर होता है। [2]यह शब्द मूलतया फिरौन से *कहे गए* थे (निर्गमन 9:13, 16), परन्तु बाद में उन्हें भावी पीढ़ियों के लाभ के लिए *लिख दिया गया* [''शास्त्र'' का अर्थ है ''लेख'']। [3]आपको चाहिए कि फिरौन और जंगल में इस्राएलियों के उदाहरणों के सम्बन्ध में परमेश्वर का कठोर होना और दया दिखाना अपनी योजना को क्रियान्वित करने के लिए था, न कि मन मर्जी से कइयों को स्वर्ग में और कइयों को नरक में भेजने के लिए। [4]यह टिप्पणी NASB भी वाली मेरी प्रति में मिलती है। [5]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 311. [6]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 361. [7]एंथ्रोपोस ''मनुष्य'' के लिए सामान्य शब्द है, जिसमें नर और मादा दोनों हो सकते हैं। [8]पुन: आप जोर देने के लिए रुक सकते हैं कि पौलुस का उदाहरण कार्य पर केन्द्रित है, न कि अनन्तकालिक भविष्य पर। [9]विद्वान चर्चा करते हैं कि ''विनाश के लिए'' इन बर्तनों को *किसने* ''बनाया'': स्वयं लोगों ने, परमेश्वर ने या किसने ? क्योंकि आयत 23 महिमा के लिए *परमेश्वर के* बर्तन बनाने की बात करती है, सम्भवतया पौलुस के मन में आयत 22 में परमेश्वर का कार्य ही हो। परन्तु हम समझते हैं कि इसमें कारकों का मेल है। वास्तविक अर्थ में लोग अपने जीवनों के द्वारा स्वर्ग या नरक के लिए *स्वयं* तैयारी करते हैं। [10]*रोमियों, 3* पुस्तक में ''उसकी इच्छा के अनुसार (8:29, 30)'' परमेश्वर के पूर्व ज्ञान पर नोट्स देखें।

[11]उस समय जब पौलुस ने रोमियों के नाम पत्र लिखा, कलीसिया में यहूदियों की अपेक्षा अन्यजाति लोग अधिकतर थे। उन अन्यजातियों ने यीशु को ग्रहण कर लिया था, जबकि अधिकतर यहूदियों ने नहीं किया था। [12]KJV में ''होशै'' की जगह ''ओसी'' है और ''यशायाह'' की जगह ''इसायास'' है (आयतें 27, 29)। KJV इन दोनों नबियों के नामों के *यूनानी* रूपों की झलक दे रहा है। [13]यशायाह 10:23 का अर्थ केवल इतना है कि परमेश्वर वही करेगा जो वह कहता है कि वह करेगा – और वह इसमें देर नहीं लगाएगा। [14]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 522–23. जहां मैं रहता हूं वहां वस्त्र बनाने के बाद बचे हुए कपड़े के लिए ''बचा हुआ टुकड़ा'' शब्द इस्तेमाल किया जाता है। [15]''सबाओथ'' शब्द को ''सब्त'' शब्द से न उलझाएं। ''सबाओथ'' का अर्थ ''सेनाओं'' है जो *सेना* का संकेत देता है (मेकोर्ड)। NIV में इस वाक्यांश का अनुवाद, ''सर्वशक्तिमान प्रभु'' किया गया है। [16]सी. ई. बी. क्रेनफील्ड, *रोमन्स: ए शॉर्टर कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 215. परमेश्वर के अनुग्रह के अन्य हवालों के लिए देखें रोमियों 11:30–32. [17]मौरिस, 345. [18]वाल्टर डब्ल्यू. वेस्सल, नोट्स ऑन रोमन, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बारकर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1720. [19]रिचर्ड ए. बेटे, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 127.